दाऊद तथा अन्यों ने डर तथा शर्म पर विजय पाई

बालको के अध्यापक बालकों का अध्ययन A2b पढ़ें

1. चोटिल, लज्जित तथा भीरू मेमनों को प्रोत्साहित करने के लिए खुद को तैयार करें।

अच्छे चरवाहे से उसकी खोई हुई तथा दुखित भेड़ के प्रति अपने लिये करूणा माँगें।

परमेश्वर से साहस प्राप्त करें। 1 शमूएल 17 पढ़ें तथा देखें कि कैसे एक चरवाहे बालक ने एक शेर, एक भालू तथा एक दैत्य को मारने के लिए भय पर विजय पाई।

परमेश्वर को शर्म दूर करने दें। 2 शमूएल 11 तथा 12 में देखें कि कैसे परमेश्वर ने दाऊद को शर्म से स्वतन्त्र किया।

(हित्ती ऊरिय्याह के विरूद्ध अपने शर्मनाक पाप का सामना करने के लिए दाऊद को साहस की आवश्यकता थी। उसने ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा के साथ अपना व्याभिचार छुपाने के लिये ऊरिय्याह को एक युद्ध में मर जाने दिया। दाऊद ने अपने पाप को अपने तक से भी नहीं स्वीकारा जब तक भविष्यद्वक्ता नातान ने उस से विवाद नहीं किया। दाऊद ने अपनी शर्म पर विजय पाई जब उसने परमेश्वर के समक्ष अपने पाप को स्वीकार किया। भजन संहिता 51 में दाऊद की पाप स्वीकृति पाई जाती है।)

सच्चे अपराधबोध तथा सिर्फ शर्म के अहसास के मध्य अन्तर को पहचानें चरवाहे की कहानी की किताब, खण्ड III अध्याय 12 एक विद्यार्थी के बारे में बताता है, जिसने स्वंय को मारने के लिये चाकू तैयार कर लिया था। उसका मित्र चिल्लया "रूको!" उसने उत्तर दिया, "एक अध्यापक ने मुझे अनुत्तीर्ण अंक दिये हैं, इसलिये मैं विश्वविद्यालय में पढ़ना जारी नहीं रख सकता। मैंने अपने तथा अपने परिवार के ऊपर शर्मिंदगी लादी है। मुझे मर जाना चाहिये!"

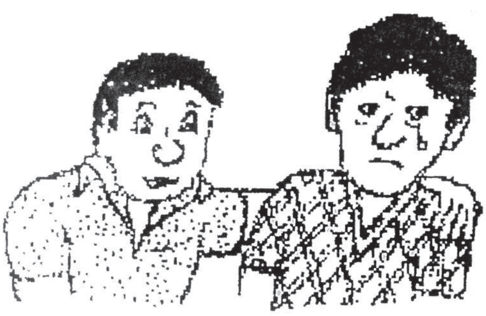

उसका मित्र उसे आश्वासन देता है, "शिक्षा के एक चरण में अनुत्तीर्ण होने पर परमेश्वर तुम्हें पापी नहीं समझता है। तुम जितना अच्छा कर सकते थे, तुमने किया। अपने आपको मारना अधिक शर्मिदिगी लायेगा, अपराधिता की शर्म।"

"फिर मैं अध्यापक का महंगा सूक्षमदर्शी चुरा लूँगा!"

"नहीं!" बदला लेने के लिये चोरी तुम्हें सच में अपराधी बना देगी! मुझे शर्म तथा अपराधबोध समझाने दो। शर्म सिर्फ एक अहसास है। अपराधिता की शर्म परमेश्वर के दण्ड के योग्य है। तुम्हें शर्म का अहसास हो रहा है, क्योंकि तूम शिक्षा के एक चरण में अनुत्तीर्ण हो गए, जब कि तुमने कोई पाप नहीं किया। परन्तु चोरी करना अपराध तथा शर्म दोनों लायेगा।!"

"मुझे कोई अन्तर दिखाई नहीं देता!"

"चलो हम शाऊल राजा तथा दो प्रकार की लज्जाओं के बारे में पढ़ते हैं।"

1 शमूएल 20:27-34 में देखें कि विद्यार्थी ने अपराध बोध और शर्म के विषय में क्या सीखा:

- राजा शाऊल ने क्यों कहा कि योनातन ने अपने परिवार को लज्जित किया? *[पद 30]*
- शाऊल कौन सी असली लज्जाजनक बात करना चाहता था? *[पद 34]*
- परमेश्वर के समक्ष किस आदमी की शर्म सच्ची अपराधिता था, शाऊल की या योनातन की?

योनातन ने शर्म का अहसास किया क्योंकि उसके पिता ने कहा था, कि दाऊद से मित्रवत व्यवहार करके उसने अपने परिवार को लज्जित किया। फिर भी योनातन में परमेश्वर के समक्ष अपराधिता नहीं थी।

उसके ईर्ष्यालु पिता राजा शाऊल ने कोई शर्म नहीं महसूस की, जबकि वो दाऊद को मारना चाहता था, जो कि निर्दोष व्यक्ति था। शाऊल का हृदय परमेश्वर के समक्ष लज्जाजनक था हम भी शर्म का अहसास करते हैं, जब कोई माता, पिता, अध्यापक या अधिकारी हमें सार्वजनिक तरीके से अपमानित करता है। हम शर्म का अहसास करते हैं जब हम पूर्ण मूर्खता भूलें करते हैं। परन्तु यह अहसास सच्ची अपराधिता नहीं होती।

शाऊल तथा योनातन के बारे में जानने के बाद विद्यार्थी विस्मयपूर्वक कहता है, "मैंने जान लिया! विश्वद्यिालय में अनुत्तीर्ण होना लज्जाजनक था, परन्तु परमेश्वर के समक्ष पाप नहीं था। दूसरी तरफ अध्यापक की चोरी करना सचमुच पाप होता। मैं उसके लिए लज्जित हुआ जो पाप नहीं था, परन्तु मुझे चोरी करने में लज्जा नहीं महसूस हुई। मैं लज्जित होना कैसे रोक सकता हूँ?"

"परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करो। वो तुम्हें क्षमा कर देगा, क्योंकि यीशु हमारे पापों के लिये मरा था।" अपने मित्र की सहायता से विद्यार्थी ने चोरी करने की इच्छा करने तथा और बहुत से पापों के लिये, यीशु के नाम में परमेश्वर से क्षमा माँगी। उसने आनन्द तथा शान्ति पाई।

दूसरों को प्रोत्साहन तथा सांत्वना देने का कौशल विकसित करें।

लूका 15:1-10 में देखें कि एक अच्छा चरवाहा क्या करता है।

इब्रानियों के अध्याय 12 में देखें:

- पीड़ित लोगों को परमेश्वर के दण्ड को कृतज्ञतापूर्वक क्यों ग्रहण करना चाहिये?
- उनकी भावी आशा क्या है?

गलतियों 6:1-5 में उन लोगों की ज़िम्मेदारियों को देखें, जो भूल कर रहें विश्वासियों का सुधार तथा पुनः उद्धार करते हैं।

यूहन्ना 20:21-23 में देखें, कि पश्चाताप कर रहे पापियों के लिये पवित्र आत्मा आपके द्वारा क्या कर सकता है।

नीतिवचन 18:13-14 में उन दो चीज़ों को देखें जो उन लोगों को सांत्वना देते समय स्मरण रखनी है, जो स्वंय को बुरा सोचते हैं।

नीतिवचन 18:13-14 को याद करें।

2. सहकर्मियों के साथ सप्ताह भर को कार्यों के योजना बद्ध करें

- उन लोगों के बारे में विचार करें जिनको प्रोत्साहन तथा प्रार्थना की आवश्यकता है। उनसे भेंट करें तथा उन्हें उनके भय लज्जा तथा अन्य समस्यायों का सामना करने में सहायता करें, जैसे दाऊद ने किया था परमेश्वर की सहायता तथा क्षमा के द्वारा।
- अगर किसी को किसी चीज़ के बारे में बुरा लग रहा है, उनकी बात सुनें तथा उन्हें यह जतायें कि आप परवाह करते हैं। उनके साथ प्रार्थना करें।
- अगर कोई विश्वासी झुँड से भटक गया हो, या अन्य व्यक्ति के बारे में कड़वाहट महसूस करता हो, अन्य सहयोगियों के साथ उससे भेंट करें, जो कि गलतियों 6:1 में आंदेश है। अगर उसने पाप किया हो, कोमलता से उसका पुनरूद्धार करें।
- बीमारों से भेंट करें, तथा यीशु के नाम में उनके लिए प्रार्थना करें।

3. सहकर्मियों के साथ आगामी आराधना का समय नियोजित करें

उन कामों का चुनाव करें, जो अवसर तथा स्थानीय रिवाज़ों के लिये उपयुक्त हो।

बच्चों से दाऊद तथा गोलियत का नाटक प्रस्तुत करने को कहें। वो व्यस्कों से उसके बारे में पूछने

के लिये प्रश्न भी तैयार कर सकते हैं।

आशा तथा **निराशा** के विषय पर एक व्यंगिका प्रस्तुत करें।

आशाः "मेरा नाम आशा है। मेरे पास अच्छा समाचार है।"

निराशः "ठहरो! मेरा नाम निराश है। मेरे पास बुरा समाचार है! मैं मृत हूँ।"

आशाः "तुम क्या हो?"

निराशः "मैं मृत हूँ! क्या तुम्हें सुनाई नहीं देता? हो सकता है कि तुम भी मृत हो।"

आशाः "तुम क्यों कहती हो कि तुम मृत हो? मुझे अपनी नब्ज़ देखने दो। (उसकी कलाई देखें) "तुम्हारे हृदय की धड़कन सशक्त है, इसलिये तुम बिल्कुल मृत नहीं हो।",

निराशः "हाँ मैं हूँ।" मैंने सपने में देखा था। मैं मृत जागी थी।"

आशाः "निराशा तुम मृत्यु से बहुत ड़रती हे।''

निराशः ''हां मुझे आने वाले कल से ड़र है। मै शर्मिन्दा हुं आपने किये।

आशाः "निराशा, हम तुम्हें समझायेंगे कि परमेश्वर कैसे लज्जा तथा अपराधिता दूर करता है।" (समुदाय से बात करें) "मुझे निराश को यह समझाने में सहायता करें, कि परमेश्वर कैसे हमारी लज्जा दूर कर सकता है। कृपया मेरी सहायता करें।"(लोगों से निराश के साथ बात करने के लिये कहें आपको एक या दो व्यक्तियों का नाम पुकार कर भी कहना पड़ सकता है।)

1 शमूएल 20:27-34 को बतायें या अभिनीत करे ंतथा दो प्रकार की लज्जाओं को समझाएं।

2 शमूएल 11 तथा 12 को बतायें या अभिनीत करें तथा यह समझायें कि कैसे परमेश्वर ने दाऊद को लज्जा से मुक्त किया था।

प्रभु भोज को प्रस्तुत करने के लिए। कुरिन्थियों 10:16 पढ़ें। समझायें कि हम किस चीज़ में हिस्सा लेते हैं।

3 सप्ताह के दौरान की कार्ययोजनाओं की घोषणा करें।

2 या 3 के समूह बनायें तथा विश्वासियों को एक दूसरे की सहायता करने दें। उनसे प्रार्थना करने, योजनायें निश्चित करने तथा एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिये कहें।